REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 3 | DECEMBER - 2018

# नारी सजगता - स्त्री मेरे भीतर के संदर्भ में

डॉ. जयकुमारी के.
असोसियेट प्रोफसर, एम . जी . कॉलेज , तिरुवन्तपुरम.

समय और परिस्थिति समाज में परिवर्तन लाती है । वही परिवर्तन मनुष्य की चेतना को भी उस दिशा में ले जाती है । परिणाम स्वरूप दलित , आदिवासी , तथा स्त्रीयाँ अपनी नई पहचान और मान्यता प्राप्त करने के लिए क्रांति मजा रही है । समय-समय पर महानुभावों ने मार्ग दर्शन किया और इन दलितों , आदिवासियों को राजनीति की मुख्यधारा में लाने की कोशिश की । लेकिन संख्या में बहुत अधिक स्त्रीयाँ अपन् हक पाने की दौड वे पीछे हैं ।

उनका कोई राजनीतिक संगठन सा मंच नहीं था । लेकिन अवसर पाने की दौड़ में कुछ सालों से उन्हें मंच और राजनीति में स्थान मिल रहा है । साहित्य के क्षेत्र में भी अब वह नया विषय नहीं है । पिछले तीन चार दशकों से स्त्री पक्ष को सशक्त आयम देखे जा सकते है । महादेवी वर्मा जी ने अपनी श्रृंखला की कडियों द्वारा स्त्री पक्ष लेखन की अलार्म बजायी है । आगे अनामिका , कात्यायनी , गगनगिल , निर्मल वर्मा ऐसे अनेक कवयत्रियों ने आगे बढाया है । निर्मल पुतुल ने स्त्रीत्व की तरफ से पूछा है ।

क्या हूँ मैं तुम्हारी लिए
मात्र एक तकिया
थके माँथे आओ और जिसपर टिका दो, एक खूँटी
जिस पर उब , उदासी और थकान से भरी एक डायरी , कमीज टाँक
जिस पर जब चाहे जो चाहे लिखा जा सक
एक गेंद ,
जिसे इच्छानुसार उछला जा सके
एक चादर,
जिसे जब चाहे , जहाँ चाहे बिछा दिया जाए 1

कहा जाता है कि स्त्री लेखिका ही अपनी संवेदना , जो भोगे हुए सत्य को , अच्छी तरह व्यक्त कर सकता है । प्रभा खेतान के शब्दों में अब तक के औरत के बारे में पुरुष ने जो कुछ लिखा , उस पूरे पर शक किया जाना चाहिए , क्योंकि लिखनेवाला न्यायार्धस और अपराधी दोनों है । लेकिन मनुष्य में संवेदन लय है । उसमें कोई लैंगिक भेदभाव नहीं है जिसका उदाहरण है कात्यायनी , पवनकरण कुमार अम्बुज आदि।2

समकालीन कवि पवनकरण मे स्त्री मेरे भीतर की कविताओं के द्वारा स्त्री के भीतर की संवेदनाओं को व्यक्त किया है । उसमें चित्रित नारी आधुनिक नहीं है , और विदेशी सभ्यता के जाल में फँसकर अपनी गरिमा को खोनेवाली भी नहीं है। लेकिन परंपरागत रूढियों में फँसकर दनघुटनेवाली भी नहीं है । यही विश्वास है कि जब स्त्री को अपनी स्वाभाविक इच्छाओं को दमन करना है । लेकिन पवनकरण ने अपने प्यार में डूबी हुई माँ के वर्णन के द्वारा इस विश्वास का अंडन किया है । विगत पिता से कल्पना में बेटी कहती है प्यार करती माँ अब विधवा के समान नहीं , शारदा सहेली के समान है । यह प्रेम संवेदना का सशक्त रूप है । बेटी की दृष्टि में विधवा माँ की अंधेरी दुनिया में वह प्रेमी रोशनी लायी है ।

स्त्री मेरे भीतर कविता संग्रह की पहली कविता जिसे तुम मेरे पिता कहती है - में स्त्री मानसिकता के दो पक्षों की ओर इशारा किया है । अपने पिता पर पुत्र द्वारा किये जाने वाले क्रूरताओं का वर्णन है जिसे देहाती माँ अपनी पिता कहती हो , जिस पिता के मात्र सोच-विचार में भी यह स्त्री नहीं है ।

सांझी नामक कविता में सपनों से भरी स्त्री रूप का वर्णन है । सांझी का खेल खेलनेवाली लड़कियों ने गोबर से जो स्त्री रूप बनायी उसमें सपनों से भरी खुश रहनेवाली स्त्री का रूप था

देखे कि इन्होंने जो गोबर से
सांझी की आँखें बनायी है
उन आँखें में कितने सपने भरे है । 3

मिथकों के आधार पर यब निश्चित किया गया कि पति देव है । अर्थात मिथक पुरुष प्रधान और स्त्री का जीवन खठपुतली की तरह यह अन्याय और अनुचित है । स्त्री के दुख को जान पहचानकर उसे समझना है । कठपुतली की तरह जीनेवाली स्त्री की अवस्था गर्भ से शुरु होती है । पैदा हो जाने पर ठीक ढंग से जीने नहीं देता । मार पीटकर वातावरण पैदा करके कठपुतली बनाती है । वह जीते जी मरती है । दूसरों के हिस्सा - किताब के अनुसार जीने से सम्मान मिलता है । इसका उदाहरण है स्त्री - सुबोधिनी नामक कविता । अपने इलकौंचे बेटे की वधु कठपुतली की तरह जीने की कला जाननेवाली हाँड-मांस की युवती टोनी चाहिए । कवि का कथन है ,

जिसे बोलने भले ही आता हो पर वह गूंगी
न इस शब्द को वह पहचानती भी न हो
और हाँ उसकी जुबान पर दरवाज़े के बाहर
हाथ बाँधे खडे नौकर की तरह रहता हो खडा
जिसे रोना बिलकुल न आता हो
चीखना तो वह जानती ही न हो । 4

उसे ज़रूर ऐसी बहु मिल जाएगी क्योंकि लडकियों को ऐसी बहु बनने की मकसद से ही पाला - पोसा है ।

स्त्री अबला है , स्त्री का जैविक स्थिति काली पुरुष अपना आधिपत्य स्थापित करके लाभ उठाया है । कोई भी उसके साथ बुझाने का पानी के रूप में उसे देखता है । उसके दिन नामक छोटी सी कविता में कवि नारी के प्रति होनेवाली घोर अत्याचार को इसप्रकार वर्णन किया है ।

उसकी लहलहाती देह
जिसे पूरी तरह रौदकर
मैं अभी -अभी लौटा हूँ
मेरी टापों के नीचे
पकी फसल जैसी है । 5

पवनकरण ने कल तक वर्जित प्रदेशों की कविता को अपना काव्य वस्तु बनाया है । नारी के प्रति होनेवाली बलात्कार को भी काव्य वस्तु के रूप में स्वीकार किया । इस मामले में वर्ग, जाति, का कोई भेद - भाव नहीं । उसका विरोध न करने को ही समझदारी माना जाता है । अपने घरवाले ही विरोध की व्यर्थता बताते है । उन्हें समझाते है जो होना था सो हो गया । अब तो चुप रहने में ही भलाई है। बदनाम से बचेंगे । घरवाले बलात्कार की घटना के भयभीत है । इस जबरन लिख दिये को ही नामक कविता में की कुछ पंक्तियाँ इस प्रमाण है ।

किसी को कुछ पता ही नहीं चलेगा
तब काहे को बलात्कार ?
कैसा बलात्कार ??
धीरे, धीरे सब ठीक हो जायेंगे
कुछ दिन नहीं निकले खर से

रही बलात्कारी की बात

उसे दंड देने केलिए ईश्वर वे 6

घरेलू वातावरण के दम-घोट के बीच में पुरुष - द्वारा फायदा उठानेवाले भी उनकी कविता का विषय है । अज्ञात व्यक्ति के टेलिफोन की बातें से परेशान होकर पति से शिकायती करती है तो वह सांत्वना तो देती है । मगर यह भी पूछता है कि -

उसने टेलिफोन पर तुम से कहा क्या - क्या 7

यहाँ कवि ने पुरुष की मानसिकता की मूल संवेदना पर करार व्यग्य किया है ।

समय बदल चुका है । स्त्री का दमन कहाँ किस तरीके से होता है यह पुरुष भी अब देखकर बरदास्त नहीं कर सकता । इसलिए ही स्री तमाम उम्र अकेले रहना स्वीकार करती है । पुरुष पति और पिता बनने के बाद अपनी भूतपूर्व प्रेमिका को भोगने उसके सामने गिडगिडाता है , तरह - तरह के तर्क देता है । कहता है -

ये केसे हो गया

तुम पुरुष के बिना रह रही हो

तुम जीने लगी हो पुरुष के बिना 7

समय के अनुसार समाज भी परिवर्तित होता है । और उसी प्रकार आधुनिक स्त्री भी पुरुष के शिकंजे से मुक्ति पाना चाहती है । इसका उदाहरण तुम जैसी चाहती हो वैसी नहीं हूँ मैं नामक कविता में देख सकते हैं । कविता में एक ऐसी नारी का चित्रण है जिनको कोई अपराध बोध भी नहीं होता कि वह इससे पहले संभोग कर चुकी है । वह स्वंय कहती है । -

दर असल कुँआरेपन को मैं ने अपने उस पूंजी

की तरह माना ही नहीं

जिसे मुझे हर हाल में रखना था सँभालकर

और सौंपना था सिर्फ अपने पति को ही। 8

इस तरह नारी के विभिन्न रूप बड़ी सरल भाषा में लेकिन खुले रूप से वर्णन किया है । निम्न और मध्यवर्गीय सब तरह की स्त्री उनकी विषय रहा है । समय-समय पर नारी जीवन के प्रति होनेवाली विडंबनाओं का वास्तविक वर्णन स्त्री मेरे भीतर नामक कविता संग्रह में देख सकते है ।

## संदर्भ ग्रथं सूचि


- स्त्री मेरे भीतर - पवनकरण
- कविता के प्रस्थान - सुधीर रंजन सिंह
- आज की कविता - विनय विश्वास